



SHRI CHINTHALA VENKAT REDDY

Shri Chinthala Venkat Reddy is an innovator in Natural farming and has patented sustainable, eco-friendly low cost process in which Soil is used as fertilizer and pesticide leading to high yields with high nutritive values in all crops. Cereals like Rice and Wheat has high nutritional value of Vitamin A, C and D3. This technology does not use chemical fertilizers and pesticides. Shri Reddy's technique has been successfully replicated in all crops by the farming communities across the country. He holds a distinction of being the first independent farmer to receive an International Patents. His patented process has brought India the pride of being Internationally acclaimed.

2. Born on 22nd December, 1950, in Alwal, Hyderabad, Shri Reddy completed Pre University Course (12th) in Biological Sciences. After successfully cultivating Cereals and Vegetables, he started farming in Grapes in the year 1978. He achieved a World Record yield of 105 tons/hectare in Anab-e-shahi seeded grapes and 84 tons/hectare in Thomson seedless grapes at his farm. His efforts were appreciated by the then Governor of Andhra Pradesh (1990), Noble Laureate, Dr. Norman E. Borlaug (1996) and Dr. R.S. Paroda DG, Indian Council of Agriculture Research (1997) by visiting Shri Reddy's farm. ICAR has brought a publication titled "Innovations of a farmer in Improved Management of Grapes" KVK series-4 in May 1998.

3. In 2002, Shri Reddy started the use of Novel Technique of using Soil as fertilizer and achieved a successive record yields in Grape, Rice and Wheat with high nutritive values as recorded by Central Research Institute for Dryland Agriculture, ICAR and Agriculture University in Hyderabad. The process was published by Geneva based World Intellectual Property Organisation (WIPO) on 5th January 2006. He has been granted patent at the national level from, nearly 60 Countries including India. He had a special Honour of meeting and receiving an Appreciation about Invention by the then President of USA, Mr. George W. Bush on 2nd March 2006 on his visit to Hyderabad.

4. Shri Reddy had another path breaking invention of soil spray to increase the growth and control of Pests and diseases of all crops, which was published on 19th Sept. 2013. Mr Reddy's farm was visited and appreciated by Dr. Ayappan, DG, ICAR in the year 2014. Vice Chancellors of Agriculture University, Dr. A. Appa Rao, Dr. M.V. Rao, Dr. I.V. Subba Rao, Dr. Padma Raju and various Scientists across the country visited his farm and appreciated his technique. He was the President of AP Grape Growers Association (1990-93), was a member in Research Advisory Committee in National Research Center for Grapes (ICAR), Pune (1998-99), was a member of Review team for ATIC (ICAR), New Delhi (1999), was a member of Standing policy of planning Committee of ICAR, New Delhi (2002-2003) and was Director of Grape Growers Federation of India (2003-05). Shri Reddy's invention is widely in use across the Country by the farmers and he is advising many farmers' groups. There has been wide appreciation by several farmers who have got higher and better yields and enhanced incomes through the use of his innovation.

5. Shri Reddy has received numerous awards and honours including Gold Medal with the Title "Draksha Ratna" from the then Governor of Andhra Pradesh in 1990; Gold Medal at International Symposium on Recent Advances in Viticulture and Oenology in Feb 1991; State Awards of AP in 1999, 2001 and Uttam Rythu Puraskar in 2006; Ch. Charan Singh National Award for Excellence in Farm Communication and Rural Development 2007; Outstanding Innovator Award by Confederation of Indian Industry (CII) in New Delhi (2009). He also received a National Award from Mahindra Samriddhi India Agri Awards in 2012. Shri Reddy was felicitated by various State Governments and ICAR Institutes.





श्री चिंथला वेंकट रेड्डी

श्री चिंथला वेंकट रेड्डी प्राकृतिक खेती में एक नवप्रर्वतक हैं और उन्होंने टिकाऊ, पर्यावरण के अनुकूल कम लागत वाली खेती प्रक्रिया का पेटेंट कराया है जिसमें मिट्टी का उपयोग उर्वरक और कीटनाशक के रूप में किया जाता है । इस विधि से सभी प्रकार की फसलों में उच्च पोषक तत्वों से युक्त अधिक पैदावार होती है। इस प्रकार की खेती से चावल और गेहूं जैसे अनाजों में विटामिन ए, सी और डी3 जैसे पोषक तत्वों की मात्रा काफी अधिक हो जाती है तथा इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। देश भर के कृषक समुदायों ने अपनी फसलों में श्री रेड्डी की तकनीक को सफलतापूर्वक अपनाया है। वह पहले किसान हैं जिन्हें अंतरराष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है । उनकी पेटेंट कराई गई प्रक्रिया ने भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाई है।

2. 22 दिसंबर, 1950 को हैदराबाद के अलवाल में जन्मे श्री रेड्डी ने जैविक विज्ञान में प्री यूनिवर्सिटी कोर्स (12 वीं) पूरा किया । अनाज और सब्जियों की सफलतापूर्वक खेती करने के बाद, उन्होंने वर्ष 1978 में अंगूर की खेती शुरू की। उन्होंने अपने खेतों में अनब–ए–शाही बीज वाले अंगूरों की 105 टन प्रति हेक्टेयर और थॉमसन बीज रहित अंगूरों का 84 टन प्रति हेक्टेयर की पैदावार करके विश्व कीर्तिमान बनाया। आंध्र प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर (1990), नोबल पुरस्कार विजेता डॉ नॉर्मन ई. बोरलॉग(1996) और डॉ आर.एस. परोदा, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (1997) ने श्री रेड्डी के खेतों का दौरा करके उनके प्रयासों की सराहना की। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने मई 1998 में केवीके श्रंखला–4 के अंतर्गत "अंगूर के प्रबंधन में सुधार के लिए एक किसान द्वारा नवान्वेषण" शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की।

3. वर्ष 2002 में, श्री रेड्डी ने मृदा को उर्वरक के रूप में उपयोग करने की एक अनूठी तकनीक का प्रयोग शुरू किया और उच्च पोषक तत्वों से युक्त अंगूर, चावल और गेहूं की लगातार रिकॉर्ड पैदावार की जिसे केंद्रीय शुष्क भूमि कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और हैदराबाद के कृषि विश्वविद्यालय द्वारा दर्ज किया गया। इस कृषि–प्रक्रिया को जिनेवा स्थित विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) ने 5 जून, 2006 को प्रकाशित किया। इसे भारत सहित लगभग 60 देशों ने राष्ट्रीय स्तर पर पेटेंट प्रदान किया है। उन्हें 2 मार्च, 2006 को संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति, श्री जॉर्ज डब्ल्यू. बुश की हैदराबाद की यात्रा के दौरान उनसे भेंट करने का विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। श्री बुश ने उनके नवान्वेषण की सराहना की।

4. श्री रेड्डी ने सभी प्रकार की फसलों की पैदावार में वृद्धि करने और उनमें कीटों और रोगों के नियंत्रण के लिए मिट्टी के छिड़काव का एक और अनोखा आविष्कार किया जो 19 सितंबर, 2013 को प्रकाशित हुआ । डॉ अयप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने वर्ष 2014 में श्री रेड्डी के खेत का दौरा किया और उनकी प्रशंसा की। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों डॉ. ए. अप्पा राव, डॉ. एम. वी. राव, डॉ. आई. वी. सुब्बा राव, डॉ. पद्म राजू और देश भर के अनेक वैज्ञानिकों ने उनके खेत का दौरा किया और उनकी तकनीक की सराहना की। वे एपी अंगूर उत्पादक संघ के अध्यक्ष(1990–93), राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर), पुणे में अनुसंधान सलाहकार समिति के सदस्य (1998–99), एटीआईसी(आईसीएआर), नई दिल्ली की समीक्षा दल के सदस्य (1999), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की स्थायी नीतिगत योजना समिति के सदस्य (2002–2003) और भारतीय अंगूर उत्पादक फेडरेशन के निदेशक (2003–05) रहे। देश भर के किसान श्री रेड्डी के आविष्कार का व्यापक उपयोग कर रहे हैं और वे अनेक किसान समूहों को परामर्श प्रदान करते रहे हैं। उनके आविष्कार का प्रयोग करके अधिक और बेहतर उपज तथा बढ़ी हुई आय प्राप्त करने करने वाले किसानों ने डॉ. रेड्डी की भरपूर सराहना की है।

5. श्री रेड्डी को 1990 में आंध्र प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल की ओर से "द्राक्षरत्न" गोल्ड मेडल, फरवरी 1991 में वीटिकल्चर और ओएनोलॉजी में नवीनतम खोज पर अंतरराष्ट्रीय परिचर्चा में स्वर्ण पदक; वर्ष 1999, 2001 में आंध्र प्रदेश राज्य पुरस्कार और वर्ष 2006 में उत्तम रायथु पुरस्कार; वर्ष 2007 में कृषि संचार और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए चौ. चरण सिंह राष्ट्रीय पुरस्कार; नई दिल्ली में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा उत्कृष्ट नवान्वेषक पुरस्कार (2009) सहित अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें वर्ष 2012 में "महिंद्रा समृद्धि इंडिया कृषि पुरस्कार" की ओर से राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला है । श्री रेड्डी को विभिन्न राज्य सरकारों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया है ।